पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे

Pag Ghungroo Bandh Meera Nachi Re • भजन • देवनागरी

पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे।

मैं तो मेरे नारायण की, आपहि हो गई दासी रे।
लोग कहें मीरा भई बावरी, सास कहे कुलनासी रे॥

विष का प्याला राणा जी भेज्या, पीवत मीरा हाँसी रे।
तन मन वार्या हरि चरणन में, दर्शन अमृत प्यासी रे॥

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, थारी सरणाँ आसी रे।
पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे॥

रचना / पाठ-परंपरा: मीराबाई; पारंपरिक पद का एक प्रचलित पाठ
पारंपरिक पाठ; वर्तनी और पाठांतर संभव हैं।